परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था,मुंबई

हिन्दी बारहवीं

विषय- कविता/कहानी/नाटक

मॉड्यूल -1 Handout

कविता

कविता साहित्य की वह विधा है, जिसमें किसी कहानी या मनोगत भाव को कलात्मक रूप से किसी भाषा के द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। कविता का शाब्दिक अर्थ है-'काव्यात्मक रचना' या 'कवि की कृति' जो छंदो की शृंखलाओं में विधिवत बाँधी जाती है।

कविता लिखने के लिए आवश्यक प्रमुख घटक

(1) भाषा- कविता किसी-न-किसी भाषा में लिखी जाती है। अतः कविता लिखने के लिए भाषा का सम्यक् ज्ञान होना चाहिए।

(2) शब्द-विन्यास- भाषा शब्दों से बनती है। शब्दों का एक विन्यास है, जिसे वाक्य कहा जाता है। अतः कविता लिखने के लिए शब्दों के विन्यास का ध्यान रखना चाहिए।

(3) काव्य शैलियों का ज्ञान - वाक्य गठन की विशिष्ट प्रणाली को शैली कहा जाता है। कविता लेखन करते समय विभिन्न काव्य शैलियों का ज्ञान होना भी जरूरी है।

(4) कम शब्दों में अपनी बात कहने की क्षमता- कविता लिखते समय कम-से-कम शब्दों में अपनी बात कहने की क्षमता होनी चाहिए।

(5) समय विशेष की प्रचलित प्रवृत्तियों की जानकारी- कविता समय विशेष की उपज होती है उसका स्वरूप समय के साथ-साथ बदलता रहता है। अतः कविता लेखन के लिए आवश्यक है कि किसी समय विशेष की प्रचलित प्रवृत्तियों की उचित जानकारी होनी चाहिए।

(6) नवीन दृष्टिकोण- कविता लेखन के लिए नवीन दृष्टिकोण का होना अत्यंत आवश्यक है। इसके बिना कविता लेखन संभव ही नहीं है।

(7) प्रस्तुतीकरण की कला- कविता केवल लिखनी ही नहीं आनी चाहिए ,बल्कि उसे प्रस्तुत करने की कला भी होनी चाहिए। प्रस्तुतीकरण की कला को प्रतिभा कहा जाता है। प्रतिभा को किसी नियम के सिद्धान्त से उत्पन्न नहीं किया जा सकता,परंतु परिश्रम और अभ्यास से विकसित किया जा सकता है।

कहानी

कहानी एक ऐसी रचना है जिसमें जीवन के एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र उसकी शैली तथा उसका कथा-विन्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं। (प्रेमचंद)

कहानी के प्रमुख तत्त्व

(क) कथानक -कथानक कहानी का ढाँचा अथवा शरीर है। इसके बिना कहानी की कल्पना ही नहीं की जा सकती। कथानक जितना सीमित,सुगठित,स्वाभाविक और कुतूहलवर्धक होगा, कहानी उतनी ही प्रभावशाली सिद्ध होगी।

(ख) पात्र और चरित्र-चित्रण - कथानक का विकास पात्रों के माध्यम से होता है। विभिन्न घटनाओं अथवा क्रिया-व्यापारों का माध्यम पात्र ही होते हैं।यही क्रिया-व्यापार पात्रों के चरित्र का उदघाटन करते हैं। कहानी क्योंकि एक संक्षिप्त गद्य-रचना है,अतः इसमें पात्र-संख्या कम-से-कम होनी चाहिए। चरित्र के भी विविध पक्षों की बजाय कोई एक संवेदनीय पहलू विशेष रूप से उजागर होना चाहिए।

(ग) संवाद- कहानी का नाटकीय प्रभाव उसके संवादों में निहित है। लेखक तो कहानी में केवल वस्तुस्थिति या वातावरण का संकेत भर देता है। कथा-विकास,चरित्र-विन्यास अथवा विचार-संप्रेषण का कार्य अधिकतर पात्रों के संवाद ही करते हैं। ये संवाद संक्षिप्त,सुगठित,चुस्त,सशक्त और हृदयस्पर्शी होने चाहिए।

(घ) भाषा-शैली- कहानी की भाषा मूलतः रचनाकार के अपनी रुचि एवं कहानी में चित्रित केवल वस्तुस्थिति या वातावरण का संकेत भर देता है। कथा-विकास, चरित्र-विन्यास अथवा विचार-संप्रेषण का कार्य अधिकतर पात्रों के संवाद ही करते हैं।

कहानीकार द्वारा कथा-वर्णन या चरित्र-चित्रण के लिए जो विशेष विधि या पद्धति अपनाई जाती है वही "शैली" कहलाती है। लेखक अपनी रुचि तथा कहानी की प्रवृति के अनुसार वर्णनात्मक, संवादात्मक, आत्मकथात्मक,पत्रात्मक अथवा डायरीशैली में से किसी एक को अथवा कुछ शैलियों के समन्वित रूप को ग्रहण कर सकता है। शैली को प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरा प्रयोग, अलंकार आदि भी सहायक हो सकते हैं। इसी प्रकार व्यंग्यात्मक ,चित्रात्मक या प्रतीकात्मक शैली का भी यथोचित उपयोग संभव है।

(ड.) वातावरम- नाटक या एकांकी की सफलता के लिए जो महत्त्व मंच-विन्यास का है वही महत्त्व कहानी में वातावरण का है। वास्तव में 'वातावरण' कहानी का सबसे सशक्त तत्त्व है। सफल कहानीकार सजीव वातावरण की सृष्टि करके पाठकों के मन-मस्तिष्क पर कहानी का ऐसा प्रभाव अंकित करता है कि वे उसी में तल्लीन हो जाते हैं।

(च) उद्देश्य- जैसे मानव-शरीर का संचालन बुद्धि और मस्तिष्क द्वारा होता है उसी प्रकार कहानी के सभी सूत्र मूलतः एक प्रेरणा-बिन्दु से जुड़े रहते हैं। वही मूल-प्रेरणा -बिन्दु ही कहानी का साध्य,लक्ष्य,कथ्य,प्रतिपाद्य या 'उद्देश्य' होता है।अन्य तत्त्व उसी साध्य के साधन होते हैं। इस संबंध में हिन्दी के कहानी-सम्राट मुंशी प्रेमचंद का निम्नलिखित कथन विशेष महत्त्वपूर्ण है-

"जिस कहानी में जीवन के किसी पहलू पर प्रकाश न पड़ता हो,जो सामाजिक रूढ़ियों की तीव्र आलोचना न करती हो,जो मनुष्यों के सद्भावों को दृढ़ न करे या ज मनुष्य में कुतूहल का भाव न जागृत करे, वह कहानी नहीं है।"

नाटक

नाटक साहित्य की वह सर्वोत्तम विधा है जिसे पढ़ने,सुनने के साथ देखा भी जा सकता है। नाटक शब्द की उत्पत्ति 'नट' धातु से मानी जाती है। 'नट' शब्द का अर्थ अभिनय है, जो अभिनेता से जुड़ा हुआ है। इसे 'रूपक' भी कहा जाता है। भारतीय परंपरा में नाटक को दृष्यकाव्य की संज्ञा दी गई है।

नाटक के प्रमुख तत्त्व

(1) कथ्य या कथानक - नाटक के लिए उसका कथ्य जरूरी होता है। नाटक में किसी कहानी के रूप को किसी शिल्प या संरचना के अंदर उसे पिरोना होता है। इसके लिए नाटककार को शिल्प या संरचना की पूरी समझ जानकारी व अनुभव होना चाहिए। इसके लिए पहले घटनाओं,स्थितियों या दृश्यों का चुनाव कर उन्हें क्रम में रखें ताकि कथा का विकास शून्य से शिखर की ओर हो।

(2) संवाद- नाटक का सबसे महत्त्वपूर्ण और सशक्त माध्यम उसके संवाद हैं। संवाद ही वह तत्त्व है जो एक सशक्त नाटक को अन्य कमजोर नाटकों से अलग करता है। संवाद जीतने सहज और स्वाभाविक होंगे उतना ही दर्शक के मर्म को छुएंगे ।

(3) भाषा - नाटक का प्राणतत्त्व भाषा है। एक अच्छा नाटककार अत्यंत संक्षिप्त तथा सांकेतिक भाषा का प्रयोग करता है। नाटक वर्णित न होकर क्रियात्मक अधिक होना चाहिए। एक अच्छा नाटक वही होता है जो लिखे गए शब्दों से ज्यादा वह ध्वनित कर , जो लिखा नहीं गया है।

(4) चरित्र- नाटक को सशक्त बनाने में चरित्र का विशेष योगदान होता है। अतः नाटक लिखते समय यह अत्यंत आवश्यक है कि नाटक के पात्र व उनके चरित्र सपाट और सतही न होकर क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करने वाले हों।

(5) रंगमंचीयता - नाटक का सबसे प्रभावशाली तत्त्व रंगमंचीयता है। नाटक रंगमंच के लिए ही लिखे जाते हैं। वही नाटक सफल माना जाता है, जिसका मंचन किया जा सके। रंगमंच नाटक की वास्तविक कसौटी होता है।

द्वारा-
संतोष कुमार खरवाल
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, जादुगोड़ा